View metadata, citation and similar papers at core.ac.uk
brought to you by CORE
provided by CMFRI Digital Repository

भारत के समुद्री पक्षी- एक अवलोकन

अजु के. आर., श्रीकुमार के. एम. और जोषी के. के.
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन– 682018, केरल

समुदी पक्षी कशेरुकियों का सबसे सफल ग्रुप है और विकास के समय इन्हें विविध प्रकार का अनुकूलन प्राप्त हुए, जिनसे जल, भूमि और वायु में जीवित रहने की सुविधा मिली। वैश्विक तौर पर समुद्री पर्यावरण के स्वास्थ्य के विश्वसनीय संकेतक के रूप में पहचाने जाते हैं। इनमें से कई अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा विशेष रूप से उच्च महासागरों में बिताते हैं, जबकि उनके प्रजनन के लिए दूरस्थ महासागरीय द्वीपों का लाभ उठाते हैं। कुछ पक्षी तटीय समुद्र में पाए जाते हैं और किसी भी समय खुले समुद्र की ओर जाने का साहस नहीं करते हैं।

भारत और इसके आसपास के समुद्र, उष्णकटिबंधीय अक्षांशों में स्थित हैं, जहॉं उत्तरी और दक्षिणी दोनों गोलार्धों से प्रवास करने वाले कई समुद्री पक्षियों की प्रजातियाँ आती रहती हैं (एक रिपोर्ट के अनुसार करीब 75प्रजातियाँ)। इसी समय, भारत के कुछ द्वीप और तटीय क्षेत्र कुछ छोटी समुद्री प्रजातियों के इतने बड़े प्रजनन काल का समर्थन नहीं करते हैं।

उत्तर गोलार्द्ध के प्रवासी समुद्री पक्षियों में आर्टिक प्रजनन प्रजातियाँ जैसे कि पोमरैन जैगर (Pomarine jaeger), पारसाइटिक (आर्टिक) जैगर (Parasitic (Arctic) एवं लंबी पूछ वाला जैगर (परिवार: स्टेरकोरारिड़े) (Long-tailed jaeger) और उत्तरी स्टॉर्म-पेट्रेल्स ग्रुप के अत्यंत विरल पक्षी (परिवार-हाइड्रोबाटिडे) भी शामिल हैं। वे उत्तरी सर्दियों के आगंतुक हैं जो आमतौर पर अक्तूबर से

आर्टिक जैगर

पल्लास गल के दृश्य

ब्लैक हेडेड गल

मार्च के महीनों के बीच देखे जाते हैं। हाइड्रोबाटिडे सदस्यों को छोड़कर समुद्री पक्षी महाद्वीपीय शेल्फ समुद्र में पाए जाते हैं, तट से अधिक दूर नहीं है। यद्यपि ये कम संख्या में होते हुए भी हमारे समुद्र में मिश्रित प्रजातियों के ग्रुप में पांच से ज़्यादा जैगरों को पाया जाता है। समुद्री पक्षियों के बीच इन्हें क्लेप्टोपारसैट (kleptoparasites) नाम से जाना जाता है और ये सजातीय पक्षियों या गल और टर्न जैसी अन्य प्रजातियों से मछलियां छीनते हुए पाए जाते हैं।

बड़े और छोटे समुद्री गल (परिवार: लारिड़े) समुद्री पक्षियों का एक अन्य समूह है, जो अपने शीतकालीन प्रवास के दौरान मुख्य रूप से तट और इसके आस-पास के समुद्र का उपयोग करते हैं। ये पूर्वी यूरोप से पूर्व रूस तक के एक विशाल क्षेत्र के बीच उच्च उत्तरी अक्षांशों में प्रजनन करते हैं। वे इस तरह के तटीय विशेषताओं, जैसा कि नदीमुख और भारतीय समुद्र तटों के आस-पास के अपतटीय जल के साथ जुड़कर पाए जाते हैं।

भारतीय तटों में होने वाले बड़े गल सामान्य तौर पर स्टेप्पी गल (Steppe gulls) और हुग्लिन गल (Heuglin gulls) हैं। वे आम तौर पर गलों की छोटी प्रजातियों जैसे ब्लैक-हेडेड (Black-headed) और ब्राउन हेडेड (Brown-headed) गलों के साथ पाए जाते हैं। वे लगातार आहार ढूँढने के लिए हमारे समुद्रों में मछली पकड़ने की विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के अवसरों का उपयोग करते हैं, मतलब है कि ये मत्स्यन आनायकों के साथ जुड़कर रहते हैं। इन समुद्री गलों के बड़े झुंडों को आनायकों और गिल जालों से जुड़कर देखा जा सकता है।

गल की तरह छोटा टर्न (परिवार: लारिड़े) भी अपतटीय समुद्र के निकट मात्स्यिकी गतिविधियों से जुड़कर पाए जा सकते हैं परन्तु खाना ढूँढने और प्रजनन कार्य के लिए खुले महासागरो में जाने के लिए खुद को प्रतिबंधित नहीं किया जाता है। भारत में, लक्षद्वीप और अंदमान-निकोबार ग्रुप के दूरवर्ती द्वीपों में टर्न के प्रजनन के छोटे उपनिवेश पाए जाते हैं। ऐसे प्रजनन उपनिवेश महाराष्ट्र के मालवन क्षेत्र के महाद्वीपीय चट्टानी द्वीपों में पाए जाते हैं। ये टर्न मुख्यतः सार्वऊष्ण कटिबंधीय (pantropical) है जो प्रजनन के बाद महासागारों के दूरस्थ क्षेत्रों में जाने के लिए सक्षम होंगे और अगले प्रजनन मौसम में प्रजनन स्थानों पर वापस आते हैं। भारत में ऐसे टर्न में सूटी टर्न (Sooty tern), ग्रेटर क्रेस्टड टर्न (Greater crested tern), लेस्सर क्रेस्टड टर्न (Lesser crested tern), ब्रैडिल्ड टर्न (Bridled tern) और ब्राउन नोडी (Brown Noddy) शामिल हैं। पश्चिमी हिन्द महासागर के विविध द्वीपों में इन टेर्नो को बड़ी संख्या में पाया जाता है। लक्षद्वीप

स्लेंडर बिल्ड गल

लेस्सर क्रेस्टड टर्न

के कवरत्ती, अगत्ती और अमिनी जैसे प्रमुख द्वीपों के बीच 'पिट्टी' (Pitti) नामक छोटा निर्जन द्वीप स्थित है। छोटे टर्न जैसे सूटी टर्न (Sooty tern), ग्रेटर क्रेस्टेड टर्न (Greater crested tern), लेस्सर क्रेस्टेड टर्न (Lesser crested tern), और ब्राउन नोडी (Brown Noddy) बड़ी संख्या (अक्सर कुछ हज़ार) में प्रजनन के लिए गैर वनस्पति युक्त रेतीले क्षेत्र का उपयोग करते हैं। वर्ष में, विविध मौसमों के दौरान द्वीप के तट पर बहकर आने वाले प्रवाल रोड़ों पर ये अंडे देते हैं। लेकिन भारत में, अंडों के अवैध शिकार जैसे मानव गतिविधियों के कारण इन पक्षियों का प्रजनन क्षेत्र खतरे में है। उत्तर गोलार्द्ध के प्रवासी समुद्री पक्षियों में सबसे प्रमुख गल है, फिर भी ओर दिलचस्प दक्षिणी उच्च अक्षांश के प्रवासी समुद्री पक्षी हैं । ये पक्षी प्रजनन और खाना ढूँढने के लिए खुले महासगारीय पारितंत्र पर अधिक निर्भर करते हैं, अत: ये पहले ही चर्चा किये जैगर और गल की तुलना में सही समुद्री पक्षी माने जाते हैं। इसके अंतर्गत 'ट्यूब नोस्ड' (tubenosed) प्रजातियाँ जैसे शियर वाटर और पेट्रेल आते हैं। फ्रिगेट पक्षी (Frigatebirds) और बूबियाँ (Boobies) (वर्ग: पेलिकानिफोर्म (Pelecaniformes) भी भारतीय समुद्र और तटों में कभी-कभी पाए जाते हैं। पक्षियों के ये सभी ग्रुप असाधारण प्रवासी हैं जो नए प्रजनन क्षेत्र ढूँढने के लिए अपने जन्म क्षेत्र से दूर महासागर के विशाल विस्तार को पार करने में सक्षम है। उदाहरण के रूप में पूर्व हिन्द महासागर के क्रिसमस द्वीप फ्रिगेटबर्ईस (Christmas Island Frigatebirds) जो केवल पूर्वी हिंद महासागर के क्रिसमस द्वीप में प्रजनन के लिए जाने जाते हैं, कभी-कभी 4500 कि.मी. से अधिक की दूरी वाले भारतीय समुद्रों में भी देखे जाते हैं। इसी तरह स्विनहो नाम से जानेवाले कुछ स्टॉर्म-पेट्रेल उत्तर-पश्चिम प्रशांत महासागर से अरब सागर तक प्रवास करने में सक्षम हैं। आमतौर पर प्रारंभिक वर्षो में प्रौढ़ पक्षियों की तुलना में युवा पक्षी लम्बे दूर जाते हैं। रोचक बात यह है कि युवा पक्षी आमतौर पर अपनी बढ़ती के शुरुआती वर्षों के दौरान प्रौढ़ पक्षियों की तुलना में लंबी दूरी तक घूमते हैं।

भारत के क्षेत्र में वेलापवर्ती समुद्री पक्षियों के प्रजनन से संबंधित कोई अभिलेख नहीं है। फिर भी, लक्षद्वीप और अंदमान-निकोबार गुप के कुछ द्वीपों में 18वीं सदी तक प्रजनन कार्य की सूचनायें हो सकती हैं। मास्कड़ बूबीस (Masked Boobies) बड़ी संख्या में उष्णकटिबंधीय समुद्री द्वीपों में प्रजनन करने के लिए जाने जाते हैं और लक्षद्वीप समूह के दक्षिण में चागोस द्वीपसमूह में इनके उपनिवेश मौजूद हैं। ए. ओ. ह्यूम द्वारा पहले ही लक्षद्वीप समुद्र में बूबीस के झुंडों को देखने का रिकोर्ड था। आजकल, इस प्रजाति के पक्षी कभी-कभी भारत के तटों पर, विशेष रूप से दक्षिण पश्चिम मानसून के मौसम

प्रजनन केलिए एकत्रित समुद्री पक्षियों का दृश्य

में तूफान के बाद देखे जाते हैं। परन्तु आजकल भारत के तटों में ये प्रजातियाँ बहुत कम पायी जाती हैं विशेषकर दक्षिण-पश्चिम मानसून मौसम के तूफान के बाद पाए जाते हैं । फ्रिगेट पक्षी भी इस तरह पाए जाते हैं ।

भारत में वेलापवर्ती पक्षियों का अन्य ग्रुप, उष्ण कटिबंधीय पक्षी जैसे रेब-बिल् (Reb-billed) और वाइट-टेइल्ड (White-tailed) का कम रिकोर्ड है। जैसा कि नाम से संकेत मिलता है, वे आमतौर पर उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय अक्षांशों में अपने वितरण को सीमित करते हैं। भारत के तटीय क्षेत्र और लक्षद्वीप से इन दो प्रजातियों का रिकोर्ड है। भारत में पहले साउथ पोलार स्कुवा (South Polar Skua) और ब्राउन स्कुवा (Brown Skua) जैसे अपूर्व पक्षियों के आगमन का रिकोर्ड है ।

दिलचस्प बात यह है कि भारत के समुद्री पक्षियों के कई दृश्य जमीन से (या तो किनारे या कभी-कभी भूमि) रिकोर्ड किए गए थे, जो आमतौर पर समुद्र से बहने वाली तेज हवाओं में पकड़े जाने के परिणामस्वरूप होता है। इसी समय, भारत में पक्षियों की निगरानी के लिए की गयी खोजयात्राएं बहुत कम होने की वजह से वेलापवर्ती पक्षी बहुत कम संख्या में पाए गए। यह विशेष रूप से दक्षिण पश्चिम मानसून अवधि के दौरान शियरवाटर्स (shearwaters) और पेट्रेल (petrels) के अधिक पारिस्थितिक या जैविक डेटा की दुर्लभता के संबंध में सच है, जब उन्हें माना जाता है कि वे भारत के आसपास अत्यधिक उत्पादक महाद्वीपीय शेल्फ जल में पाए जाते हैं।

फ्लेश फूटड शियरवाटर (flesh footed shearwater) संभवतः समुद्री जल का सबसे बड़ा समूह है जो भारत में पहले मानसून के महीनों के दौरान पाए जाते हैं। ये भारत के दक्षिण पश्चिम तटीय समुद्र में बड़े झुंडों में पाए जाते हैं।

समुद्री पक्षियों के संबंध में, भारत के समुद्रों में विभिन्न मौसमों के दौरान समुद्री पक्षियों के वितरण के पैटर्न की निगरानी के लिए नियमित रूप से व्यापक वेलापवर्ती सर्वेक्षण करने की महत्वाकांक्षी योजनाओं की आवश्यकता है। समुद्री पक्षियों के एकत्रीकरण के सम्बन्ध में क्षेत्रों के सीमांकन में भारत के विविध समुद्री पक्षियों की विविधता और प्रचुरता एवं मात्स्यिकी के साथ इनका आपसी विनिमय महत्वपूर्ण है। यदि ज़रूरत हो तो, हमारे क्षेत्र के समुद्री पक्षियों द्वारा सामना कर रही अतिसंवेदनशीलता को दूर करने के लिए टिकाऊ मत्स्यन व्यवहारों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।